आशीर्वचन - चेयरपर्सन महोदय

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय

प्रवेश विवरणिका

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय

कल्याण लोक, जावदा, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

पिन कोड – 312601, हेल्पलाइन- 01477-294394

www.skvv.ac.in

विषय सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
I	राष्ट्रगान एवं वैदिक राष्ट्रगान	4
II	कुलगीत	5
III	आशीर्वचन - चेयरपर्सन महोदय	6
IV	शुभकामना सन्देश- प्रेसिडेंट महोदय	7
V	प्रतीक चिन्ह एवं ध्येय वाक्य	8
1.0	**विश्वविद्यालय- एक दृष्टि में**	**9-16**
1.1	परिचय	9
1.2	परिसर में उपलब्ध प्रमुख सुविधाएँ	10
1.3	विश्वविद्यालय की उपलब्धियां :	13
1.4	गतिविधियां	13
1.5	विस्तारपरक गतिविधियाँ	14
1.6	शैक्षणिक कैलेंडर	14
1.7	विश्विद्यालय के कार्मिकों का परिचय	15
2.0	**सञ्चालित पाठ्यक्रम**	**16-20**
2.1	वेद-वेदांग संकाय : (यजुर्वेद एवं ज्योतिष विभाग)	17
2.2	धर्मागम एवं पुराणेतिहास संकाय : (धर्मागम एवं पुराणेतिहास विभाग)	17
2.3	भारतीय दर्शन संकाय : (अद्वेत वेदांत/सर्वदर्शन विभाग)	17

2.4	भाषा संकाय : (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं राजस्थानी विभाग)	18
2.5	मानविकी संकाय : (कला विभाग)	18
2.6	योग संकाय : (योग विज्ञान विभाग)	19
3.0	**प्रवेश नियमावली**	**21-27**
3.1	प्रवेश के सामान्य नियम	21
3.2	प्रवेश प्रक्रिया	21
3.3	आवश्यक दस्तावेज	22
3.4	प्रवेश निरस्त विषयक सामान्य नियम	23
3.5	आचार संहिता	24
3.6	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रैगिंग निषेध अधिनियम-2009	25
3.7	लोकपाल {विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (छात्रों की शिकायतों का निवारण) विनियम, 2023}	27
4.0	**विश्वविद्यालय की प्रमुख समितियाँ**	**28-31**
4.1	प्रवेश समिति	28
4.2	छात्रावास प्रवेश समिति	29
	शान्तिपाठ	**32**

❑❑❑

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

❑❑❑

वैदिक राष्ट्रगान

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो बह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यः अति
व्याधी महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरंध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

- शुक्ल यजुर्वेद २२.२२

❑❑❑

कुलगीत

जयेद् वैदिको विश्वविद्यालयोऽयम्।
भवेत् कीर्तितो विश्वविद्यालयोऽयम् ।। ध्रुव-

प्रभोः प्रेमभक्त्या प्रसिद्धास्ति मीरा
सुवीरो जयेद् यत्र राणाप्रतापः।
तथा चास्ति मेवाड़ – कल्याणवीरः
प्रदेशे स देवोस्ति कल्लाजिनामा ।।

जयेत् वैदिको विश्वविद्यालयोऽयम्।
भवेत् कीर्तितो विश्वविद्यालयोऽयम्।। १

चतुर्वेद - सांगोपवेदाः समस्ताः
पदज्योतिषान्वीक्षिकीयोगयुक्ताः ।
पुराणेतिहासादि - साहित्यविद्याः
सुविज्ञैः सदा यत्र संपाठ्यमानाः।।

जयेद् वैदिको विश्वविद्यालयोऽयम्।
भवेत् कीर्तितो विश्वविद्यालयोऽयम्।। २

सुदक्षाः कलाज्ञानविज्ञानदीक्षा
अनेकेऽत्र ये शिक्षितच्छात्रवर्गाः।
पुरः स्पर्धमाना लभन्ते प्रतिष्ठां
यशः ख्यापयन्तीति सत्यं सुधन्याः ।।

जयेद् वैदिको विश्वविद्यालयोऽयम्।
भवेत् कीर्तितो विश्वविद्यालयोऽयम् ।। ३

प्रणेता -

प्रो. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेयः'

कुलपतिः
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय

आशीर्वचन - चेयरपर्सन महोदय

श्री कैलाशचन्द्र मूंदड़ा
चेयरपर्सन
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय
निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ के परिसर में आपका स्वागत है। ऋषियों ने उद्घोष किया है कि- **'विद्या परमं बलम्** ॥ विद्या ही श्रेष्ठ बल है।' शिक्षा मनुष्य के ज्ञान की आधारशिला तथा देश के विकास का सूत्रधार है, इसके बिना मनुष्य न तो उन्नत जीवन जी सकता है और न ही अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय चार प्रमुख लक्ष्य- उत्कृष्ट शिक्षण, छात्र संतुष्टि, असाधारण शोध और सामाजिक उत्तरदायित्व पर केन्द्रित है, इसीलिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम को निरंतर शिक्षण-प्रशिक्षण, अनुसंधान और नवाचार सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है। इसके अनुसार, हमने सरकार, व्यापारिक-सामाजिक संस्थाओं और अन्य शोध संस्थानों के साथ साझेदारी स्थापित की है।

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करता है, जहाँ छात्रों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है। हमारा प्रयास छात्रों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ नवीन ज्ञान को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। जिससे विद्यार्थी मानवीय उच्च गुणों से युक्त जिम्मेदार नागरिक बनकर राष्ट्रहित में सहयोगी बनेंगें ।

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय के इस प्रतिष्ठित परिसर के लिए चयनित सभी छात्रों का स्वागत है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप विश्वविद्यालय परिवार के साथ जुड़कर गर्व महसूस करेंगे और अपनी उपलब्धियों से गौरवान्वित होंगें।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ, छात्रों को श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

प्रो. (डॉ.) तारा शंकर शर्मा
प्रेसिडेंट (कुलपति)
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय
निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

शुभकामना सन्देश- प्रेसिडेंट महोदय

प्रिय विद्यार्थियों,

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय के दिव्य प्राकृतिक वातावरण में आपका स्वागत है।

अब आप एक महत्वपूर्ण जीवन-यात्रा का शुभारंभ कर रहे हैं। ज्ञान और विद्या की इस पवित्र भूमि में प्रवेश करते हुए आप अपने सपनों को साकार करने की दिशा में पहला कदम रख रहे हैं।

विश्वविद्यालय में आपका जीवन का एक अविस्मरणीय अध्याय होगा। यहां आपके शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ समग्र व्यक्तित्व का भी विकास होगा। यहाँ भिन्न-भिन्न संस्कृति और विचार वाले व्यक्तियों के संपर्क में आने का अवसर मिलेगा, जिससे जीवन के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित होगा। यहाँ आप अपनी अभिरुचियों को विकसित कर अपनी प्रतिभा निखार सकते हैं और नए-नए कौशल सीख सकते हैं। विश्वविद्यालय आवश्यक संसाधन और समर्थन प्रदान करके आपके स्वप्नों को उन्मुक्त आकाश प्रदान करेगा।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि आप विश्वविद्यालय में प्रवेश के अवसर का भरपूर लाभ उठाएं। कड़ी मेहनत करें, लगन से अध्ययन करें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ रहें। स्वामी विवेकानंद का भी उद्घोष है- "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप सभी में सफलता की असीम क्षमता है। विश्वविद्यालय परिवार आपकी सफलता के लिए सदैव आपके साथ रहेगा।

उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको अनन्त शुभकामनाएं!

अर्थात् जिस प्रकार जौ को छानकर, फटक कर ग्रहण करने योग्य सत्तू प्राप्त किया जाता है, उसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति वाणी के द्वारा सौभाग्य को प्राप्त करते है। यहाँ वाणी का माहात्म्य उपमा अलंकार द्वारा दर्शाया गया है।

विश्वविद्यालय के ध्येय वाक्य के आश्रय में वाक् देवी की संस्तुति के द्वारा ज्ञान रूपी श्रेष्ठ फल की कामना की गयी है। महर्षियों ने संस्कृत भाषा को देवी वाक् स्वरूपा बताया है (**'संस्कृतं नाम देवी वाग् अन्वाख्याता महर्षिभि।'**)। शब्द ब्रह्मस्वरूप है, अतः कामधेनु के समान समस्त अप्राप्य की प्राप्ति कराने में समर्थ है। विश्वविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों का संस्कृत भाषा और ज्ञान के प्रति अभीप्सा बनी रहे, ऐसी मंगलकामना ध्येय वाक्य में निहित है।

हमारा दृष्टिकोण और उद्देश्य :

हमारा सपना एक ऐसे भारत देश के निर्माण का है जहाँ मनुष्य और प्रकृति सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व में रहें। यह एक ऐसा राष्ट्र हो जहाँ मानवीय गुणों का विकास हो। हम दृढ़ विश्वास रखते हैं कि यह विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य और श्रेष्ठ कर्मों का मार्ग प्रशस्त करेगा।

विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य छात्रों को नई शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप भारतीय ज्ञान परम्पराओं के साथ-साथ आधुनिक विषयों की उत्तम शिक्षा प्रदान करना है। हम समग्र मूल्यों पर आधारित और प्रगतिशील शिक्षा के माध्यम से ऐसे युवा तैयार करना चाहते हैं, जिन पर उनका परिवार, विश्वविद्यालय और राष्ट्र गर्व कर सकें।

हमारे लक्ष्य :

- मूल्य आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- छात्रों की रोजगारोन्मुखी कौशल क्षमता विकसित करना।
- युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उनका आत्मविश्वास बढ़ाना।
- छात्रों को उद्योगों के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
- शोध के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करना।
- उन्नत भविष्य के लिए सुअवसर प्रदान करना।

1.0 विश्वविद्यालय एक दृष्टि में :

1.1 परिचय :

सम्पूर्ण विश्व में वीर-प्रसविनी धरा के रूप में प्रसिद्ध तथा अनगिनत ओजस्वी सपूतों के देदीप्यमान इतिहास से पल्लवित राजपूताना की धरती पर लोक मान्यता के अनुसार सम्वत् 1601 में कल्लाजी राठौड़ का जन्म मारवाड़ के सामियाना जागीर के राव श्री अचलाजी के यहाँ हुआ था। महान् साधक, क्षत्रियों के सिरमौर एवं भारतीय परम्परा के महादूत श्री कल्लाजी सम्पूर्ण राष्ट्र को सन्देश हैं कि- "वेद सम्पूर्ण विश्व कल्याण का श्रेष्ठतम साधन है। वेदों से बढ़कर सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त करने का कोई और माध्यम नहीं हो सकता है।" सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण का बीज वेदों में है तथा उस वेदपथ का अनुसरण करने से ही मानवता सुखी रह सकती है। इस अभिप्राय से उन्होंने जन-मानस को प्रेरणा दी है कि एक वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना करके, राष्ट्र में एक नई आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना का सूत्रपात किया जाए।

इस दिव्य स्वप्न को साकार करने के लिए श्री शेषावतार 1008 श्री कल्लाजी वेदपीठ एवं शोध संस्थान, निम्बाहेड़ा द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना का संकल्प लिया गया। इसी निमित्त सन् 2018 के राजस्थान विधानसभा के अधिनियम क्रमांक 11 के द्वारा श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय स्थापना अधिनियम स्वीकृत किया गया ।

यह विश्वविद्यालय वैदिक ज्ञान परंपरा को प्रचारित-प्रसारित करने हेतु निजी क्षेत्र का अभिनव प्रयास है । शैक्षणिक रूप से पिछड़े क्षेत्र में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वैदिक ज्ञान परम्परा को विकसित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया । यह विश्वविद्यालय वैदिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए छात्रों के बौद्धिक ज्ञान के साथ साथ सुसंस्कारित करने में निरंतर प्रयासरत है तथा वैदिक परम्परा के छात्रों एवं शोधकर्ताओं के लिए एक ज्ञान संसाधन केंद्र के रूप में कार्यरत है ।

1.2 परिसर में उपलब्ध प्रमुख सुविधाएँ :

1.2.1 विश्वविद्यालय पुस्तकालय: महर्षि यास्क केन्द्रीय ग्रंथालय :

महर्षि यास्क केन्द्रीय ग्रंथालय, श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय का हृदय है। यह ज्ञान का विशाल भंडार है जो विद्यार्थी, शोधकर्ता, शिक्षक और ज्ञानपिपासु को प्रेरित करता है। पुस्तकालय विभिन्न संकायों में ज्ञान संवर्धन और अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्वविद्यालय परिसर के मध्य में स्थित, इस ग्रंथालय में 15,000 से अधिक पुस्तकों का संग्रह है, जिसमें वेद, पुराण, साहित्य, ज्योतिष, योग और अन्य शास्त्रों के अतिरिक्त आधुनिक विषय यथा प्रबन्धन, विधि आदि के ग्रंथ शामिल हैं। विभिन्न विषयों के लघुशोध एवं संस्कृत शोध पत्रिकाओं के 500 से अधिक पुराने अंक उपयोगार्थ संग्रहीत है। ग्रन्थालय में धर्मशास्त्र, वेद-विज्ञान, व्याकरण, ज्योतिष, दर्शन, शिक्षा तथा कोष इत्यादि विषयों पर देश-विदेश में प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संग्रह है। संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत प्रकाशित दुर्लभ ग्रन्थों तथा अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए प्रयासरत है। इस प्रकार यह विद्यार्थी तथा शोधार्थी के लिए एक अमूल्य खजाना है।

यह ग्रंथालय केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं है, अपितु ज्ञान और प्रेरणा का स्रोत है। ग्रंथालय में 100 से अधिक हस्तलिखित पांडुलिपियां भी हैं, जो अतीत के ज्ञान का परिचायक हैं। यह पुस्तकों, पत्रिकाओं, जर्नलों और समाचार पत्रों का व्यापक संग्रह प्रदान करता है, जो ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों माध्यमों में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त आगम-निर्गम सेवा, बिबलियोग्राफी सेवा, सामयिक अभिज्ञता सेवा, चयनित सूचना प्रसार सेवा, संदर्भ सेवा और सूचना प्रबन्धन सहित विभिन्न सेवाएँ प्रदान करता है। नियमित समाचार पत्र उपलब्ध है। ग्रन्थालय में वेदपाठी छात्रों के अध्ययन हेतु पुस्तकालय में केबिन एवं सौ से अधिक छात्रों की बैठक व्यवस्था उपलब्ध है। इस प्रकार आधुनिक सुविधाओ से सुसज्जित यह पुस्तकालय पुरातन और नवीन ज्ञान को प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

बुक बैंक की स्थापना : केन्द्रीय पुस्तकालय में निर्धन छात्र-छात्राओं के लिए बुक बैंक की स्थापना की गई हैं, जिसमें छात्रों से पुरानी पुस्तकें प्राप्त कर उनका संग्रह कर निर्धन छात्रों को उपलब्ध कराई जा रही है।

1.2.2 छात्रवृत्ति :

सभी पाठ्यक्रमों में महिला, दिव्यांग और अनुसूचित जाति-जनजाति के विद्यार्थियों के लिए विशेष छात्रवृत्ति का प्रावधान है, इसके अतिरिक्त केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा देय छात्रवृत्ति भी विद्यार्थी प्राप्त कर सकता है ।

1.2.3 खेल सुविधाएं :

विश्वविद्यालय में हम छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम पाठ्यक्रम के साथ-साथ खेलकूद और अन्य गतिविधियों को भी समान महत्व देते हैं। हमारा मानना है कि एक स्वस्थ शरीर ही एक ग्रहणशील सुदृढ़ मस्तिष्क का आधार बनता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विभिन्न खेलों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान की हैं। हमारे परिसर में वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन, एथलेटिक्स, कबड्डी, क्रिकेट और फुटबॉल के लिए खेल मैदान हैं। हम अन्य पारंपरिक खेलों के लिए भी सुविधाएं विकसित करने की दिशा में अग्रसर हैं।

1.2.4 कंप्यूटर प्रयोगशाला :

हमारे पास विद्यार्थियों के लिए नवीनतम तकनीकी सुविधा से युक्त सुसज्जित आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला है। सम्पूर्ण उपकरणों को UPS द्वारा बैकअप प्रदान किया गया है। विश्व की आधुनिक सूचनाओं और ज्ञान से जुड़े रहने के लिए तीव्र गति वाले ब्रॉडबैंड कनेक्शन भी निर्बाध रूप से उपलब्ध है । इसमें उच्च योग्यता प्राप्त शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।

12.5 परिवहन सुविधा :

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय में आगामी सत्र से 20 किलोमीटर के दायरे में स्थित आसपास के क्षेत्रों और गांवों से छात्र छात्राओ के लिए परिवहन सेवा प्रारंभ करने के लिए संकल्पित है । यह पहल छात्रों को व्यक्तिगत सुरक्षा, यात्रा में विश्वसनीयता और समय की पाबंदी सुनिश्चित करेगी । विश्वविद्यालय परिसर से 10 किलोमीटर दूरी पर से वाहन सेवा उपलब्ध हैं !

1.2.6 सांस्कृतिक-सेमिनार हॉल :

विश्वविद्यालय परिसर शानदार सभागार, अत्याधुनिक प्रोजेक्टर और साउंड सिस्टम से सुसज्जित, शिक्षा एवं संस्कृति के अद्‌भुत आयोजनों का केंद्र है। यह सभागार आरामदायक बैठने की व्यवस्था के साथ विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन हेतु एक आदर्श स्थल है।

1.2.7 चिकित्सा सुविधा :

विश्वविद्यालय परिसर में स्थित आयुर्वेद क्लिनिक छात्रों, आगंतुकों, कर्मचारियों और शिक्षकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए क्लिनिक में अनुभवी डॉक्टरों, नर्सिंग स्टाफ, मनोवैज्ञानिकों और सहायक कर्मचारियों की एक टीम उपलब्ध है, जो रोगियों की देखभाल करने के लिए समर्पित है। यह मुख्यतः आयुर्वेद चिकित्सा पद्धत्ति, पंचकर्म और प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित है। परिसर में आपातकालीन स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए एक पूरी तरह से सर्वसुविधा युक्त एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध है।

1.2.8 छात्रावास सुविधाएं:

हम समझते हैं कि आपके लिए घर से दूर रहना एक पीड़ादायक अनुभव हो सकता है इसीलिए, पारिवारिक वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय परिसर में आरामदायक और सुरक्षित छात्रावास उपलब्ध है। ये छात्रावास आपकी शैक्षणिक यात्रा को सुखद और सुविधाजनक बनाने में मदद करता हैं। सुरक्षा की दृष्टि से छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास की व्यवस्था है। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित प्रत्येक छात्रावास में 50 विद्यार्थियों के रहने के लिए स्थान है।

1.2.9 बहुउद्देशीय हॉल :

विश्वविद्यालय परिसर में खेल मैदान के निकट एक बहुउद्देशीय हाल स्थित है, जिसमें पृथक से सज्जा कक्ष भी उपलब्ध है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त यह हॉल सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ इंडोर खेल, योगाभ्यास और खेल प्रतियोगितओं के लिए आदर्श स्थल है ।

1.2.10 यज्ञशाला :

विश्वविद्यालय के ब्रह्मस्थल पर 51 फीट ऊँची, 51 फीट लम्बी और 51 फीट चौड़ी यज्ञशाला निर्मित है । इसमें मुख्य कुण्ड के अतिरिक्त 11 कुण्डों की तात्कालिक व्यवस्था है, वेदाध्ययन करने वाले बटुकों द्वारा प्रतिदिन प्रातः काल ईशभक्ति और वेद मन्त्रों से सर्वजन कल्याण के अभीष्ट हेतु यजन किया जाता है । यज्ञ स्थल पर ही ठाकुर श्री कल्लाजी राठौर का भव्य मंदिर है। इसके अतिरिक्त ईशान कोण में शिव मंदिर भी स्थित है।

1.3 विश्वविद्यालय की उपलब्धियां :

खेलो इंडिया राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक :

हमारे छात्रों ने विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। सत्र 2023-24 में आयोजित अखिल भारतीय जोनल कुश्ती प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय दूसरे स्थान पर रहा, जिसमें हमारे छात्रों ने 3 स्वर्ण और 2 कांस्य पदक जीते। इसके अतिरिक्त, फ्री स्टाइल कुश्ती के 65 किलो वर्ग में छात्र प्रदीप कुमार ने खेलो इंडिया राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता।

1.4 गतिविधियां :

1.4.1 कल्याण प्रज्ञा (विश्वविद्यालय शोध पत्रिका) :

विश्वविद्यालय अर्द्ध-वार्षिक रूप से एक मानक शोध पत्रिका प्रकाशित करता है। सम्मानित विद्वानों और शोध छात्रों द्वारा उच्च अकादमिक मूल्य के शोध पत्र को संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं।

1.4.2 यज्ञ पात्र संग्राहालय:

वैदिक कर्मकांड, यज्ञ और पूजन-अर्चन इत्यादि में उपयोग होने वाली समस्त सामग्री एवं यंत्र प्रायोगिक रूप से उपलब्ध है ।

1.4.3 ज्योतिष प्रयोगशाला :

ज्योतिषीय नक्षत्रों एवं ग्रहों की गति, स्थिति और प्रक्षेपण ज्ञात कराने के लिये उपयोग में आने वाली प्रायोगिक सामग्रियां और विशेष यंत्र इस प्रयोगशाला में उपलब्ध है।

1.4.4 साहित्य परिषद् :

विश्वविद्यालय में एक श्रेष्ठ और अभिनव अवधारणा को शुरू किया गया है, जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षक मासिक संगोष्ठी में भाग लेते हैं और अपने शोधपूर्ण शोध निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हैं। हर महीने, एक पूर्व-निश्चित दिन पर, प्रत्येक संकाय के शिक्षक अन्य शिक्षकों और छात्रों के सामने अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

1.5 विस्तारपरक गतिविधियाँ :

1.5.1 योग कार्यक्रमों का आयोजन :

विभिन्न विशेष अवसरों यथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, अवसरों पर जनसामान्य में योग सम्बन्धी जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विविध योग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

1.5.2 कैरियर (उन्नत भविष्य) चयन कार्यशालाओं का आयोजन :

विद्यार्थियों के भविष्य को नई दिशा प्रदान करने के लिए अनेक स्वर्णिम अवसर उपलब्ध है। इन अवसरों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और जीवन लक्ष्य का निर्धारण करने के उद्देश्य से युवा दिवस तथा अन्य पावन अवसरों आदि पर विश्विद्यालय निरंतर सक्रीय है और अभी तक शताधिक कार्यक्रमों के आयोजन कर चुका है।

1.6 शैक्षणिक कैलेंडर :

शैक्षणिक कैलेंडर पृथक से विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अद्यतन रूप में www.skvv.ac.in पर उपलब्ध है।

1.7 विश्विद्यालय के कार्मिकों का परिचय :

1.7.1 शैक्षणिक संवर्ग परिचय :

क्र. सं.	नाम	पद/विषय	योग्यता
1	डॉ. स्मिता शर्मा	(अधिष्ठाता) सह आचार्य संस्कृत	M.A., NET-JRF, Ph.D.
2	डॉ. मृत्युंजय तिवारी	अध्यक्ष (ज्योतिष विभाग) सहायक आचार्य	Acharya, Ph.D.
3	डॉ. लोकेश चौधरी	सहायक आचार्य (योग)	M.Sc., NET-JRF, SRF, Ph.D.
4	सुश्री रचना शर्मा	सहायक आचार्य (संस्कृत)	M.A., M.Phil., SLET
5	डॉ. सुनील कुमार शर्मा	सहायक आचार्य (कंप्यूटर विज्ञान)	M.C.A., Ph.D.
6	डॉ संजू शर्मा	सहायक आचार्य (हिन्दी)	M.A., NET-JRF, Ph.D.
7	डॉ. रेणु शर्मा	सहायक आचार्य (अंग्रेजी)	M.A., Ph.D.
8	विकास शर्मा	सहायक आचार्य (भूगोल)	M.A., NET
9	डॉ. अनुष्का औझा	सहायक आचार्य (इतिहास)	M.A. NET, P.H.D.
10	नरेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य (राजनीती विज्ञान)	M.A. NET
11	डॉ. ललित कुमार	सहायक आचार्य (ज्योतिष)	ACHARYA, NET, P.H.D.

1.7.2 प्रशासनिक संवर्ग परिचय :

क्र. सं.	नाम	पद/विषय
1	डॉ. मधुसूदन शर्मा	कुल सचिव
2	डॉ. चंद्रवीर सिंह राजावत	मुख्य परीक्षा नियन्त्रक
3	श्री राकेश पारीक	मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी
4	डॉ. श्रवण सैनी	उप कुलसचिव
5	श्री देवीलाल कुम्हार	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
6	सुश्री साक्षी मिश्रा	पुस्तकालय सहायक

1.7.3 मंत्रालयिक संवर्ग परिचय :

क्र. सं.	नाम	पद/विषय	योग्यता	विशेष
1	श्री मनीष चाँदना	निजी सहायक (कुलसचिव)	M.A., PGDCA	
2	सुश्री हर्षिता झाला	लिपिक	M.A.	
3	सुश्री किरण रेगर	लिपिक	M.A.	
4	श्री कन्हैयालाल नगारची	लिपिक	M.A.	
5	श्री देवेन्द्र जैन	कंप्यूटर ऑपरेटर	M.Com	
6	श्री कमलेश सोनी	बहुविकल्पीय कर्मचारी	10th	

2.0 सञ्चालित पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) -2020 के अनुसार, समस्त कार्यक्रमों को बहु-प्रवेश-निकास (multiple Entry-Exits) के साथ बनाया गया है।

2.1 वेद-वेदांग संकाय : (यजुर्वेद एवं ज्योतिष विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	शास्त्री (बी.ए. समकक्ष)	ऋग्वेद/ सामवेद/ यजुर्वेद/ज्योतिष	12th उत्तीर्ण या समकक्ष (संस्कृत माध्यम)	3 वर्ष (6 Semester)	80
2	आचार्य (एम.ए. समकक्ष)	ज्योतिष	शास्त्री (संस्कृत माध्यम)	2 वर्ष (4 Semester)	40

2.2 धर्मशास्त्र आगम एवं पुराणेतिहास संकाय : (धर्मशास्त्र विभाग एवं पुराणेतिहास विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	शास्त्री (बी.ए. समकक्ष)	आगम, धर्मशास्त्र एवं पुराणेतिहास	12th उत्तीर्ण या समकक्ष (संस्कृत माध्यम)	3 वर्ष (6 Semester)	80
2	आचार्य (एम.ए. समकक्ष)	आगम, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास	शास्त्री (संस्कृत माध्यम)	2 वर्ष (4 Semester)	40

2.3 भारतीय दर्शन संकाय : (अद्वेत वेदांत/सर्वदर्शन विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	B.A.	अद्वेत वेदांत/ सर्वदर्शन	12th उत्तीर्ण या समकक्ष	3 वर्ष (6 Semester)	80
2	M.A.	अद्वेत वेदांत/ सर्वदर्शन	स्नातक उत्तीर्ण या समकक्ष	2 वर्ष (4 Semester)	40

2.4 भाषा संकाय : (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं राजस्थानी विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	शास्त्री (बी.ए. समकक्ष)	संस्कृत साहित्य, व्याकरण, वांग्मय	12th उत्तीर्ण या समकक्ष (संस्कृत माध्यम)	3 वर्ष 6 SEMESTER	80
2	आचार्य (एम.ए. समकक्ष)	संस्कृत साहित्य, व्याकरण, वांग्मय	शास्त्री (संस्कृत माध्यम)	2 वर्ष 4 SEMESTER	40
3	B.A.	हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, राजस्थानी	12th उत्तीर्ण या समकक्ष	3 वर्ष 6 SEMESTER	80
4	M.A.	हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, राजस्थानी	स्नातक	2 वर्ष 4 SEMESTER	40

2.5 मानविकी संकाय : (कला विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	B.A.	हिंदी/ अंग्रेजी/राजनीति विज्ञान / भूगोल / कंप्यूटर/ इतिहास / मनोविज्ञान /अर्थशास्त्र / समाजशास्त्र/ लोक प्रशासन / गृह विज्ञान / चित्रकला/संस्कृत / राजस्थानी	12th उत्तीर्ण या समकक्ष	3 वर्ष (6 Seme-ster)	80

2	M.A.	हिंदी/ अंग्रेजी/ राजनीति विज्ञान / भूगोल / इतिहास / मनोविज्ञान /अर्थशास्त्र / समाजशास्त्र/ लोक प्रशासन / गृह विज्ञान / चित्रकला /संस्कृत / राजस्थानी	सम्बंधित विषय में स्नातक	2 वर्ष (4 Seme-ster)	40

2.6 योग संकाय : (योग विज्ञान विभाग)

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	B.A. / B.Sc.	योग	12th उत्तीर्ण या समकक्ष	3 वर्ष (6 Semester)	80
2	P.G. Diploma	योग	स्नातक उत्तीर्ण या समकक्ष	1 वर्ष (2semester)	60
3	M.A.	योग	स्नातक उत्तीर्ण या समकक्ष	2 वर्ष (4 Semester)	80
4	M.Sc.	योग	स्नातक (विज्ञान संकाय) उत्तीर्ण या समकक्ष	2 वर्ष (4 Semester)	80

नोट: प्रत्येक पाठ्यक्रम के सञ्चालन हेतु न्यूनतम 10 विद्यार्थियों का होना अनिवार्य हैं।

2.7 कंप्यूटर साइंस एवं सूचना प्रोद्योगिकी

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	विषय	न्यूनतम योग्यता	अवधि	स्थान (प्रति सेक्शन)
1	पी.जी.डी.सी.ए.	COMPUTER SCIENCE	किसी भी विषय में स्नातक उतीर्ण	01 वर्ष 2 SEMESTER	40

आवेदन कैसे करें :

उपरोक्त पाठ्यक्रम में से किसी में भी प्रवेश पाने के इच्छुक उम्मीदवार www.skvv.ac.in वेबसाइट पर उपलब्ध निर्धारित आवेदन पत्र के साथ आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन की अंतिम तिथि 25 अगस्त 2024 है। पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन पत्र सहायक दस्तावेजों के साथ संलग्न कर निम्न पते पर अंतिम तिथि तक आवश्यक रूप से भेजें।

प्रवेश समिति प्रभारी
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय
कल्याण लोक, जावदा, निम्बाहेड़ा – 312601, जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)
हेल्पलाइन :+91 86962-23225

नोट:

- उम्मीदवार को अपना सक्रिय मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी देना होगा।
- सभी संचार केवल एसएमएस और ईमेल के माध्यम से ही होंगे।
- आवेदकों को सलाह दी जाती है कि प्रवेश प्रक्रिया सम्बन्धी नवीनतम सूचनाओं के लिए नियमित रूप से विश्वविद्यालय की वेबसाइट देखें.

भुगतान विवरण: नगद/चेक/मनीऑर्डर/ भारतीय डाक आदेश के माध्यम से भुगतान स्वीकार नहीं किया जाएगा। **ऑनलाइन (NEFT/Online Banking) माध्यम से ही भुगतान स्वीकार होगा।**

Account Holder Name : SHRI KALLAJI VEDIC VISHVAVIDYALAYA
Account No. : 668601702083
IFSC Code : ICIC0006686

- यदि बैंक लेनदेन में किसी प्रकार की विफलता का अनुभव होता है, तो उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे बैंक से स्पष्टीकरण प्राप्त होने तक प्रतीक्षा करें।
- सभी उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे सभी प्रकार के भुगतान का रिकॉर्ड रखें।
- शुल्क संरचना में परीक्षा शुल्क शामिल नहीं है।

3.0 प्रवेश नियमावली-

3.1 प्रवेश के सामान्य नियम :

1. प्रवेश हेतु अभ्यर्थी को न्यूनतम योग्यता अथवा उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है ।
2. **अध्यापन का माध्यम**: पारंपरिक पाठ्यक्रमों को संस्कृत एवं हिंदी माध्यम में पढ़ाया जाएगा और परीक्षा का माध्यम भी संस्कृत/हिंदी होगा। आधुनिक विषयों के लिए अध्यापन और परीक्षा का माध्यम हिंदी/अंग्रेजी होगा और अन्य भाषाओं के लिए संबंधित भाषा ही अध्यापन और परीक्षा का माध्यम होगी।
3. **परीक्षाएं**: विश्वविद्यालय सभी नियमित कार्यक्रमों के लिए सेमेस्टर प्रणाली का अनुसरण करता है। सेमेस्टर **परीक्षाएं** आमतौर पर दिसंबर और मई महीने में आयोजित की जाती हैं।
4. **उपस्थिति**: सभी कार्यक्रमों के लिए 75% उपस्थिति अनिवार्य है।
5. **परिधान** : विश्वविद्यालय परिसर में शालीन वेशभूषा ।

3.2 प्रवेश प्रक्रिया :

प्रवेश प्रक्रिया को सरल और सहज बनाने के उद्देश्य से प्रवेश के लिए आवेदन पत्र ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों ही माध्यमों पर उपलब्ध है, किन्तु **आवेदन पत्र ऑफलाइन ही जमा होगा** । विद्यार्थी इस बात का विशेष ध्यान रखे की जब तक वे अपने मूल प्रव्रजन प्रमाण-पत्र (MIGRATION), स्थानांतरण प्रमाण-पत्र (TC), चरित्र प्रमाण-पत्र (CC) और कहीं सरकारी या अर्ध-सरकारी या किसी निजी संस्थान में सेवा में या अन्यत्र कहीं अध्ययनरत नहीं होने का शपथ-पत्र मय नोटरी विश्वविद्यालय में जमा करवाना अनिवार्य है । उपर्युक्त दस्तावेजों के अभाव में विद्यार्थी **अस्थाई प्रवेश** के ही पात्र होंगें ।

3.3 आवश्यक दस्तावेज :

विद्यार्थी को आवेदन पत्र जमा कराने के साथ-साथ नीम्न दस्तावेज़ पाठ्यक्रमानुसार विश्वविद्यालय में जमा करना अत्यावश्यक है।

स्नातक हेतु	**स्नातकोत्तर अथवा पी. जी. डिप्लोमा हेतु :**
• अभ्यर्थी के 5 फोटो • कक्षा 10 की अंक तालिका • कक्षा 12 की अंक तालिका • मूल निवास प्रमाण पत्र • जाति प्रमाण पत्र की प्रति • आधार कार्ड • मूल प्रव्रजन प्रमाण पत्र (MIGRATION) • मूल स्थानांतरण प्रमाण पत्र (TC) • मूल चरित्र प्रमाण पत्र (CC) • किसी अन्य कार्य में संलिप्त न होने का शपथ पत्र • BPL श्रेणी से है तो BPL प्रमाण पत्र • Anti Ragging Undertaking Reference no:	• अभ्यर्थी के 5 फोटो • कक्षा 10 की अंक तालिका • कक्षा 12 की अंक तालिका • स्नातक अंकतालिका (प्रत्येक वर्ष की) • मूल निवास प्रमाण पत्र • जाति प्रमाण पत्र • आधार कार्ड • मूल प्रव्रजन प्रमाण पत्र (MIGRATION) • मूल स्थानांतरण प्रमाण पत्र (TC) • मूल चरित्र प्रमाण पत्र (CC) • किसी अन्य कार्य में संलिप्त न होने का शपथ पत्र • BPL श्रेणी से है तो BPL प्रमाण पत्र • Anti Ragging Undertaking Reference no:
नोट: प्रत्येक दस्तावेज को स्व-सत्यापित करना आवश्यक है।	

Anti Ragging Undertaking Reference no: http://antiragging.in/ से प्राप्त करना होगा।

विशेष सूचना : विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि आवेदन करने से पूर्व उक्त चेक लिस्ट के अनुसार अपने दस्तावेज जाँच ले और इसके अनुसार ही व्यवस्थित क्रम में दस्तावेज आवेदन पत्र के साथ आवश्यक रूप से विश्वविद्यालय में जमा कराए । इसके बिना विश्वविद्यालय किसी भी आवेदन को किसी भी स्तर पर निरस्त करने का अधिकार रखता है ।

3.4 प्रवेश निरस्त विषयक सामान्य नियम:

- सभी उम्मीदवारों को, जिन्हें अस्थायी प्रवेश दिया गया है, उन्हें अपने प्रव्रजन प्रमाण पत्र (MIGRATION), स्थानांतरण प्रमाण पत्र (TC) और चरित्र प्रमाण पत्र (CC) **मूल** रूप में **प्रवेश की अंतिम तिथि से एक महीने के भीतर** जमा करने के लिए निर्देशित किया जाता है, **ऐसा नहीं करने पर उनका प्रवेश रद्द कर दिया जाएगा**।
- यदि कोई छात्र प्रवेश के अंतिम तिथि के भीतर अपना प्रवेश रद्द करना चाहता है, तो उसे विश्वविद्यालय का स्थानांतरण प्रमाण-पत्र दिया जाएगा और कुल जमा शुल्क में से रु 1,000/- प्रसंस्करण शुल्क के रूप में काट लिया जाएगा। शेष राशि मूल शुल्क रसीद के प्रस्तुत करने पर संबंधित बैंक खाते में वापस कर दी जाएगी। (इस सन्दर्भ में UGC प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही की जाएगी।)
- अध्ययन अवधि के दौरान किसी अन्य विश्वविद्यालय परीक्षा में बैठने की अनुमति किसी भी छात्र को नहीं दी जाएगी।
- यदि विद्यार्थी अवैध, राष्ट्रविरोधी गतिविधियों, असामाजिक गतिविधियों, हड़ताल आदि में भाग लेता है तो नाम नामावली से हटाया जा सकता है या उसे निष्कासित किया जा सकता है।
- छात्रों को प्रवेश तिथि से एक महीने के बाद वैकल्पिक विषय बदलने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

विश्वविद्यालय किसी विशेष पाठ्यक्रम के लिए प्राप्त आवेदनों की संख्या के आधार पर उस वर्ष पाठ्यक्रम चलाने या न चलाने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

3.5 आचार संहिता :

आचार संहिता परिसर के सभी विद्यार्थी अनुशासन के समस्त नियमों का सख्ती से पालन करेंगे -

1. प्रत्येक छात्र - छात्रा को विश्वविद्यलय परिसर के गौरव को बढ़ाने के लिए सद आचरण से रहना होगा ।
2. छात्रों को आत्मानुशासन का पालन करना होगा और कक्षाओं में नियमित उपस्थिति रखनी होगी ।
3. छात्रों को किसी भी प्रकार की अनुशासनहीनता पर उन्हें यथोचित दण्ड दिया जायेगा। छात्रों द्वारा अत्यन्त गम्भीर दुर्व्यवहार या अनुशासनहीनता का दोषी पाये जाने पर/प्रमाणित होने पर अनुशासन समिति की अनुशंसा पर छात्र को विश्वविद्यालय से निष्कासित भी किया जा सकता है।
4. कोई छात्र यदि परिसर की सम्पत्ति की क्षति करता है, तो वह अनुशासनात्मक कार्यवाही के योग्य माना जायेगा तथा क्षतिग्रस्त सम्पत्ति की भरपाई के लिए वह जिम्मेदार होगा।
5. छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे परिसर की गरिमा को बनाए रखेंगे। जो परिसर की गरिमा के विपरीत हो ऐसी किसी भी अवांछित गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों को सख्त मना किया जाता है ।
6. परिसर में स्वयं या उनके द्वारा हिंसा फैलाने, शान्ति भंग करने, अपनी बात जबरदस्ती मनवाने का प्रयास करने पर परिसर की अनुशासन समिति उस छात्र को दण्डित कर सकती है।
7. परिसर में कालांश के समय छात्रों द्वारा मोबाइल फोन का उपयोग सर्वथा वर्जित है।
8. पान, तम्बाकू एवं अन्य नशीले पदार्थ का सेवन वर्जित है ।
9. अनुशासन समिति की अनुशंसा पर विश्वविद्यालय प्रशासन का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा ।

3.6 रैगिंग निषेध – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रैगिंग निषेध अधिनियम-2009

विश्वविद्यालय परिसर में रैगिंग सख्त वर्जित है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रैगिंग निषेध अधिनियम-2009 के नियम-6.3 (क) दिनांक 17 जून, 2009 के अनुसार परिसरों में रैगिंग दण्डनीय अपराध है।

https://www.ugc.gov.in/oldpdf/ragging/gazzetaug2010.pdf

निम्नलिखित कोई एक अथवा अनेक कार्य रैगिंग के अन्तर्गत आएँगे -

- किसी छात्र अथवा छात्रों द्वारा नए आने वाले छात्र का मौखिक शब्दों अथवा लिखित वाणी द्वारा उत्पीड़न अथवा दुर्व्यवहार करना।
- छात्र अथवा छात्रों द्वारा अनुशासनहीनता का वातावरण बनाना जिससे नए छात्र को कष्ट, आक्रोश, कठिनाई, शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा हो।
- किसी छात्र से ऐसे कार्य को करने के लिए कहना जो सामान्य स्थिति में न करे तथा जिससे छात्र में लज्जा, पीड़ा अथवा भय की भावना उत्पन्न हो।
- वरिष्ठ छात्र द्वारा किया गया कोई ऐसा कार्य जो किसी अन्य अथवा नए छात्र के चलते हुए शैक्षिक कार्य में बाधा पहुँचाए।
- नए अथवा किसी अन्य छात्र का दूसरों को दिए गए शैक्षिक कार्य को करने हेतु बाध्य कर शोषण करना।
- नए छात्र का किसी भी प्रकार से आर्थिक शोषण करना।
- शारीरिक शोषण को कोई भी कार्य/किसी भी प्रकार का यौन शोषण, समलैंगिक प्रहार, नंगा करना, अश्लील तथा काम सम्बन्धी कार्य हेतु विवश करना, अंग चालन द्वारा बुरे भावों की अभिव्यक्ति करना, किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट जिससे किसी व्यक्ति अथवा उसके स्वास्थ्य को हानि पहुँचे ।
- मौखिक शब्दों द्वारा किसी को गाली देना, ई -मेल, डाक, पब्लिकली किसी को अपमानित करना, स्थानापन्न अथवा कष्ट देना या सनसनी पैदा करना जिससे नए छात्र को घबराहट हो ।
- कोई कार्य जिससे नए छात्र के मन मस्तिष्क अथवा आत्मविश्वास पर दुष्प्रभाव पड़े । नए अथवा किसी छात्र को कुमार्ग पर ले जाना तथा उस पर किसी प्रकार की प्रभुता दिखाना ।

3.7 रैगिंग की घटनाओं पर प्रशासनिक कार्यवाही :

रैगिंग निषेध अधिनियम-2009 के नियम 9.1 (ख) के अनुसार रैगिंग में संलिप्त छात्र/छात्रा के लिए निम्नलिखित दण्ड का प्रावधान हैं।

9.1 किसी छात्र को रैगिंग का दोषी पाए जाने पर संस्था द्वारा निम्नलिखित विधि अनुसार दण्ड दिया जाएगा ।

क. रैगिंग विरोधी समिति उचित दण्ड के सम्बन्ध में उचित निर्णय लेगी अथवा रैगिंग की घटना के स्वरूप एवं गम्भीरता को देखते हुए रैगिंग विरोधी दल दण्ड हेतु अपनी संस्तुति देगा।

ख. रैगिंग विरोधी समिति रैगिंग विरोधी दल द्वारा निर्धारित किए गए अपराध के स्वरूप और गम्भीरता को देखते हुए

निम्नलिखित में कोई एक अथवा अनेक दण्ड देगी:

1. कक्षा में उपस्थिति होने तथा शैक्षिक अधिकारियों से निलम्बन।
2. छात्रवृति/छात्र अध्येता तथा अन्य लाभों को रोकना/वंचित करना।
3. किसी प्रतियोगी परीक्षा तथा अन्य मूल्यांकन प्रक्रिया में उपस्थिति होने से वंचित करना।
4. परीक्षाफल रोकना।
5. किसी प्रादेशिक, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मीट, खेल, युवा महोत्सव आदि में संस्था का प्रतिनिधित्व करने से वंचित करना।
6. छात्रावास से निष्कासित करना।
7. प्रवेश रद्द करना।
8. संस्था से 04 सत्रों तक के लिए निष्कासन करना।
9. विश्वविद्यालय परिसर से निश्चित अवधि तक निष्कासन करना।
10. रैगिंग करने अथवा रैगिंग करने के लिए भडक़ाने वाले व्यक्तियों की पहचान न हो सके तो विश्वविद्यालय सामूहिक दण्ड का आश्रय ले सकता है।

ग . रैगिंग विरोधी समिति द्वारा दिए गए दण्ड के विरुद्ध अपील (प्रार्थना) प्रेसिडेंट से की जा सकेगी ।

3.8 लोकपाल {विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (छात्रों की शिकायतों का निवारण) विनियम, 2023 }

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार छात्र शिकायत समिति की स्थापना और लोकपाल की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोकपाल, यह गारंटी देता है कि छात्र शिकायत समिति की कार्यवाही यूजीसी के विनियमों के अनुरूप है। वह छात्रों के अधिकारों की रक्षा करता है और एक अनुकूल शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देता है। उक्त आयोग के विनियमों के अनुसार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (छात्रों की शिकायतों का निवारण) विनियम, 2023 की धारा 6(i) के तहत, 11 अप्रैल 2023 की अधिसूचना के माध्यम से विश्वविद्यालय ने छात्र शिकायत निवारण समिति (एसजीआरसी) के लोकपाल को नामित किया है। विवरण निम्न प्रकार से हैं।

नाम एवं संपर्क सूत्र

प्रो. विनोद शास्त्री

(पूर्व कुलपति)

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्विद्यालय,

जयपुर, राजस्थान

Phone :

EMail ID: vshastri123@gmail.com

4.0 विश्वविद्यालय की प्रमुख समितियाँ :

4.1 प्रवेश समिति :

1. **स्नातक-** डॉ मृत्युंजय कुमार तिवारी, डॉ सुनील कुमार शर्मा एवं सुश्री रचना शर्मा, डॉ. अनुष्का औझा, श्री विकास शर्मा
2. **परास्नातक-** डॉ स्मिता शर्मा एवं डॉ लोकेश चौधरी

4.0 छात्रावास :

छात्रावास के प्रवेश नियम एवं आवेदन पत्र पृथक् रूप से निर्धारित शुल्क देकर प्राप्त किया जा सकता है ।

(क) छात्रावासीय प्रवेश हेतु वरीयता

1. छात्रावास में प्रवेश गत परीक्षा में प्राप्तांकों के आधार पर वरीयता क्रम से होगा।
2. दूरस्थ छात्रों को छात्रावास प्रवेश में प्राथमिकता दी जायेगी।
3. पूर्व आवासीय छात्रों को पुनः छात्रावास में रहने की प्राथमिकता दी जायेगी, बशर्तेउसने पूर्व परीक्षा उतीर्ण की हो, साथ ही उसका आचरण उत्तम रहा हो !
4. किसी भी छात्र के प्रवेश सम्बन्धी सम्पूर्ण अधिकार प्रवेश समिति के पास रहेगा।

4.1 छात्रावासीय विवरण -

विश्वविद्यालय परिसर में पूर्णकालिक सतत शिक्षा हेतु समुचित अध्ययन सुविधा की दृष्टि से दूरस्थ छात्र/छात्राओं हेतु पृथक् पृथक् छात्रावासों की व्यवस्था उपलब्ध है।

(i) पुरुष छात्रावास

छात्रों हेतु 2 भवनों में कुल 12 कमरे छात्रावास हेतु प्रकाश व हवा की समुचित सुविधायुक्त निर्मित है। वही इन भवन संकुलो के मध्य खेल मैदान विकसित है। विविध मूलभूत सुविधाएं व सुरक्षित छात्रावास उपलब्ध है।

(ii) महिला छात्रावास

(क) छात्राओं की सुविधा हेतु पृथक् महिला छात्रावास कृष्णा कुंवर छात्रावास है। इसमें आधुनिक दृष्टि से अटैच्ड शौचालय व स्नानगृह की सुविधायुक्त कमरे निर्मित है।

(ख) महिला छात्रावास में प्रवेश आवेदन-पत्र के साथ जमा कराये जाने वाले अनिवार्य प्रमाणपत्र -

1. छात्रा से मिलने वालों का पास जारी करने हेतु माता/ पिता/भाई इनमें से किन्हीं दो की पिता द्वारा हस्ताक्षर युक्त दो फोटो तथा हस्ताक्षर युक्त आई.डी. संलग्न करें।
2. छात्रा को सामग्री लाने/ चिकित्सालय जाने / स्थानीय संरक्षक के घर जाने की अनुमति हेतु 50 रुपये के स्टाम्प पेपर पर 'शपथ पत्र' निर्दिष्ट प्रारूप के अनुसार संलग्न करना होगा। यदि स्थानीय संरक्षक के यहाँ जाने की अनुमति मिल गई है तो स्थानीय संरक्षक का पिता द्वारा हस्ताक्षर युक्त आई.डी. संलग्न करें।

4.2 छात्रावास नियम:

1. रैगिंग में भाग लेना, बढ़ावा देना पूर्णतः निषिद्ध है।
2. छात्रावास में संतोषजनक आचरण न पाए जाने पर छात्रावास से पात्रता रद्द कर दी जाएगी।
3. छात्रावास अधीक्षक द्वारा निर्धारित कक्ष में ही विद्यार्थी को रहना होगा।

4. फर्नीचर एवं विद्युत व्यय (विद्युत् बोर्ड द्वारा निर्धारित दर के अनुसार) देय होगा। (वर्तमान में लागू नही)

5. विश्वविद्यालय/छात्रावास की संपत्ति को क्षति पहुँचाने की स्थिति में निर्धारित आर्थिक दण्ड देय होगा।

6. संक्रामक बीमारी से ग्रसित होने की स्थिति में अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र देकर छात्रावास छोड़ना होगा।

7. बिजली से संचालित यन्त्रों के उपयोग हेतु लिखित अनुमति आवश्यक होगी, अनुमति मिलने पर अतिरिक्त शुल्क देय होगा। (कूलर, हीटर, रॉड, रूम हीटर, एसी प्रतिबंधित रहेगा ।)

8. छात्रावास अधीक्षक द्वारा प्रतिदिन रात्रि 09:00 बजे निरीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से अपने-अपने कक्ष में उपस्थित रहना होगा। रात्रि 10:00 बजे छात्रावास का मुख्य द्वार बन्द कर दिया जायेगा, रात्रि 10:00 बजे के पश्चात किसी भी छात्र/छात्रा को छात्रावास में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

9. बिना अनुमति के छात्रावास / विश्वविद्यालय परिसर से बाहर रहना/जाना वर्जित है। कक्षा समय पूर्व एवं पश्चात छात्रावास परिसर से बाहर जाना प्रतिबंधित रहेगा।

10. मादक पदार्थों का सेवन पूर्णतः निषिद्ध है. अतः लिप्त पाए जाने पर छात्रावास का प्रवेश रद्द कर दिया जायेगा।

11. मुख्य परीक्षाओं के उपरान्त या छात्रावास छोड़ते समय कक्ष को पूर्ण खाली कर कक्ष की चाबी अधीक्षक को सौपनी अनिवार्य है।

12. विद्यार्थियों को नियमानुसार स्वास्थ्य सम्बन्धी चिकित्सा प्रमाण-पत्र प्रवेश के साथ जमा कराना होगा।

13. विद्यार्थियों को अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करनी होगी।

14. विद्यार्थियों के अतिथियों को छात्रावास में रूकने की अनुमति नहीं है।

15. भोजनादि हेतु बर्तन स्वयं छात्र/छात्रों का लाने होंगे। स्नान हेतु बाल्टी, मग इत्यादि विद्यार्थी की होगी।

16. किसी भी विवाद की स्थिति में छात्रावास अधीक्षक एवं प्रशासन का निर्णय ही अन्तिम एवं मान्य होगा।

❑❑❑

शान्तिपाठः

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्बह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः ।
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयङ्कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

❑❑❑